पर्यावरणीय चेतना रूपी शिक्षा

संदीप कुमार*
कमल**

पर्यावरण संबंधी समस्याओं, उनके कारण तथा समाधान के बारे में अधिकांश व्यक्तियों का ज्ञान तथ्यों तक ही सीमित है। यही कारण है कि अब तक हम पर्यावरण संबंधी विश्व दृष्टिकोण का विकास नहीं कर सके। यहाँ तक कि अपने ही भविष्य के बारे में हम अब तक वर्तमान पीढ़ी को सचेत, संवेदनशील एवं सावधान करने में पूरी तरह सफल नहीं हो पाए हैं। हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था भावी पीढ़ी में पर्यावरणीय चेतना लाने में ज़्यादा कारगर साबित नहीं हो पाई है। पर्यावरणीय चेतना केवल पुस्तकीय ज्ञान से विकसित नहीं की जा सकती। इसके लिए विद्यार्थियों को कक्षा से बाहर आना होगा, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़कर चर्चा करनी होगी। प्रकृति का अवलोकन करना होगा, भ्रमण, देशाटन आदि में भाग लेना होगा। अर्थात् उन्हें वे सब काम करने होंगे, जो उनकी पुस्तकों से बाहर हैं। इसके लिए शिक्षक की भूमिका केवल किताबी ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहेगी। प्रस्तुत लेख में विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना जाग्रत करने संबंधी बिंदुओं पर चर्चा की गई है।

पर्यावरण संबंधी समस्याओं, उनके कारण तथा निराकरण आदि के बारे में अधिकांश व्यक्तियों का ज्ञान तथ्यों तक ही सीमित है। यही कारण है कि अब तक हम पर्यावरण संबंधी विश्व दृष्टिकोण का विकास नहीं कर सके। यहाँ तक कि अपने ही भविष्य के बारे में हम अब तक वर्तमान पीढ़ी को सचेत, संवेदनशील एवं सावधान करने में असफल रहे हैं।

समय बहुत सीमित है तथा मानवता के लिए शायद यह अंतिम अवसर है। अब उसे पर्यावरण के विनाश एवं प्रदूषण से आने वाले संकट के बारे में सावधान हो जाना चाहिए। हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था इस चेतना एवं सतर्कता के भाव को लाने में अब तक असफल रही है। अर्थात् हमारी शिक्षा व्यवस्था में कहीं न कहीं कोई मौलिक कमी है।

क्या कारण रहे हैं कि आज शिक्षकों और अभिभावकों को पर्यावरण विनाश और पर्यावरण प्रदूषण की जितनी चिंता है, उतनी चिंता विद्यार्थियों को नहीं है? ऐसा लगता है कि हमारी शिक्षण की विधियों-प्रविधियों में कहीं न कहीं दोष है, तभी तो वे वांछित परिणाम देने में असफल रही हैं। अतः हमें

* *शोधार्थी,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007
** *शोधार्थी,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

अपने पर्यावरण से जुड़ना है तथा इसकी कार्यविधि को समझना है। इसी से पर्यावरणीय चेतना आएगी और इसी से मानव जाति का अस्तित्व बना रह सकेगा।

आज पर्यावरण की शिक्षा देने वाले शायद पर्यावरण के प्रति सचेतना नहीं ला पा रहे हैं। उनको अपने ज्ञान को अधुनातन रूप में रखना होगा, क्योंकि आज विज्ञान और तकनीकी के उच्चस्तरीय विकास के कारण आज का ज्ञान कल ही बासी हो रहा है। पर्यावरण संबंधी पुस्तकें तेज़ गति से अप्रासंगिक बनती जा रही हैं। बासी, अपर्याप्त, अधूरी तथा डरावनी सूचनाओं से अब काम नहीं चल सकता। शायद हमें अपने चिंतन और मनन में "हरित क्रांति" लानी होगी। हमें ऐसे "हरित क्रांति" वाले पर्यावरणविद् चाहिए जो पर्यावरण सुधार, उसकी सुरक्षा तथा उसके संवर्धन के लिए समर्पित एवं प्रतिबद्ध हों।

पारिस्थितिकी अपने आप में विज्ञान है। इससे विज्ञान का क्षेत्र रोचक, आनंदमय तथा प्रासंगिक बनता है। पारिस्थितिकी में अवलोकन, सांख्यिकीय संकलन तथा प्रयोग आदि की भी पूरी गुंजाइश है। पारिस्थितिकी में अनेक विषयों का समावेश है, जैसे—जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, इतिहास, भूगोल, गणित, प्राणी विज्ञान, भू-भौतिकी या कोई अन्य विषय। इन विषयों की सीमा को पार करते हुए हम पारिस्थितिकी के क्षेत्र में भ्रमण और विचरण करते हैं।

हमारी सबसे पहली आवश्यकता है अपने आस-पास के वातावरण को जानने और समझने की। लेकिन इस बात पर आज बहुत कम ध्यान दिया जाता है। विद्यालयों में उद्यानों अथवा खेल के मैदानों के रख-रखाव पर ध्यान नहीं दिया जाता। इसलिए विद्यालयों में देश के भावी कर्णधारों का पर्यावरण से साक्षात्कार ही नहीं हो पाता।

पर्यावरण मात्र नारा नहीं है। सरकार हो, चाहे कोई उद्योग अथवा कोई शिक्षा केंद्र ही क्यों न हो, सबको आज पर्यावरण को केंद्र में रखकर चलना होगा। स्कूल और कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में सभी स्तरों पर इस ज्ञान को सम्मिलित करना होगा। हमारा दुर्भाग्य यह है कि हम सिद्धांतों में ही खोए रहते हैं। पर्यावरण के प्रति सचेतना और सजगता लाने के लिए हमें पर्यावरण का विश्लेषण करना होगा, उसके संबंध में निष्कर्ष निकालने होंगे। पर्यावरण चेतना के लिए यह आवश्यक है कि हम भावी पीढ़ी को इस प्रकार से तैयार करें कि वह पर्यावरण के प्रति नवचेतन होकर भविष्य के लिए सावधान हो जाए।

शताब्दियों पुराना संतुलन तथा मनुष्य का भटकाव

हमें युवा पीढ़ी को बताना होगा कि प्रकृति और मनुष्य के बीच का संतुलन शताब्दियों-सहस्त्राब्दियों पुराना है। प्रकृति और मनुष्य के बीच एक मधुर सहसंबंध था। न तो मनुष्य ने प्रकृति के सौंदर्य से छेड़छाड़ की और ना उसे लूटने की कोशिश की तथा उधर प्रकृति ने भी मनुष्य को ममता, प्यार और दुलार, सबकुछ दिया।

मगर आज मनुष्य की लालसा ने सारा गुड़-गोबर कर दिया। ऊर्जा की अंधाधुंध खपत, वनों की बेशुमार कटाई, अनायास बढ़ती हुई जनसंख्या की बाढ़, तेज़ी से फैलता हुआ प्रदूषण और उसके बीच संसाधनों का निर्मम शोषण — यही बदला चुकाया मनुष्य ने

प्रकृति का। फ़सलों की अधिक पैदावार के लालच ने पृथ्वी को रासायनिक खाद से भर दिया। आवागमन के साधनों, जैसे— मोटरगाड़ियों, स्कूटरों, ट्रकों, ट्रेक्टरों आदि की ताबड़-तोड़ भागदौड़ ने वातावरण में धुआँ ही धुआँ भर दिया।

उपभोग की संस्कृति ने कोयले, पैट्रोलियम पदार्थ तथा अन्य प्रकार के खनिजों का अधिकतम खनन तथा खान-पान और साज-सज्जा की अकांक्षा ने जीव-जंतुओं के संहार का रास्ता खोल दिया।

मानव को क्या पता था कि वनों की लकड़ी काटते-काटते वह अपनी किस्मत और भाग्य पर भी कुल्हाड़ी चला रहा है। उसको इस बात का कहाँ पता था कि कल-कारखानों और बड़े-बड़े उद्योगों का दूषित जल नदियों में बहाकर वह न केवल मछलियों और जल के जीवों का जीवन समाप्त कर रहा है, अपितु अपनी स्वयं की जीवन रेखा (लाइफ़ लाइन) को भी छोटी करता जा रहा है। वायुमंडल को कार्बन-डाई-ऑक्साइड से भरकर हवा की ताज़गी को नष्ट कर रहा है जो पूरी मानवता के लिए खतरनाक है। अज्ञान और नादान मनुष्य, यह सब कुछ करता चला गया और आज जब पर्यावरण का संतुलन लगभग बिगड़ चुका है, तो उसे पर्यावरण की महत्ता और उपयोगिता समझ में आई है। इसी महत्व तथा महत्ता और उपयोगिता की जानकारी का नाम पर्यावरण चेतना, पर्यावरण जाग्रति तथा पर्यावरण शिक्षा है।

पर्यावरण चेतना के लिए पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण की शिक्षा एक साथ तीन काम करती है —

1. पर्यावरण के प्रति सचेतना जाग्रत करना;
2. पर्यावरण के बारे में सही समझ का विकास करना; एवं
3. मानव और शेष जगत् (प्रकृति, जीव-जंतु एवं वनस्पति) के बीच अंतर्संबंधों को इस प्रकार व्यवस्थित करना जिससे जीव जगत् एक सही संतुलन बनाकर साथ-साथ रह सकें।

इसके साथ ही पर्यावरण शिक्षा यह समझ पैदा करती है कि मानव पर्यावरण की रक्षा किस प्रकार से करे। उपलब्ध संसाधनों का सही उपयोग कैसे हो तथा प्रदूषित पर्यावरण के बारे में जाने, पर्यावरण से सीख ले एवं पर्यावरण सुधार के लिए काम करे, यही पर्यावरण चेतना और पर्यावरण शिक्षा की मूल भावना है।

सामंजस्य एवं विकास

पर्यावरण शिक्षा और चेतना औपचारिक भी हो सकती है तथा अनौपचारिक भी। पर्यावरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है — व्यक्ति को पर्यावरण के अनुसार ढालना तथा उसमें प्रकृति के साथ सामंजस्य और समन्वय करने की कला विकसित करना।

विद्यार्थियों को पर्यावरण की जानकारी और उसकी सही शिक्षा मिल जाए और वे उसके साथ आत्मीयता रखें तो उनका विकास भी सही दिशा में होगा। प्रकृति उन्हें नित नये अनुभव और रोमांचकारी जानकारियाँ देगी। वह उनके लिए अपने रहस्यों से भरे खज़ाने को खोल देगी।

समझने के लिए पर्यावरण से साक्षात्कार आवश्यक

बालकों में अटूट जिज्ञासा तथा अनंत उत्सुकता रहती है। कभी उसकी जिज्ञासा को जग जाग्रत करता है, तो कभी पवन उसको झकझोरता है। पृथ्वी के घूमने से

लेकर पृथ्वी की गहराई तक के सोच-विचार सोचने और विचार करने के लिए मजबूर करते रहते हैं। मौसम का परिवर्तन, चंद्रमा का छोटा-बड़ा रूप, चंद्रमा के द्वारा शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष का बनना, पक्षियों का उड़ना तथा जल-जीवों की जल में मस्त जल-क्रीड़ा, आँधी, तूफ़ान, बाढ़ और सूखा तथा ज्वालामुखी और भूकंप के कारण विनाश की लीला का होना आदि बातों का होना-आखिर ये सब क्या है? क्यों है? कैसे होता है? यही और इसी प्रकार की जिज्ञासाएँ बालमन को प्रकृति से जोड़ती हैं।

बालक प्रकृति को जानना चाहता है, उसके लक्षणों व गुणों को जानना चाहता है। परंतु बालक को प्रकृति के साथ में थमा दिए जाते हैं, गणित के फ़ार्मूले, इतिहास की घटनाओं के अम्बार, नागरिक जीवन के कानून और कायदे और विज्ञान के दुरूहतम सूत्र। बालक इन सब बातों को प्रकृति की गोद में बैठकर नहीं, भीड़-भाड़ तथा उमस भरे कक्षा के कमरे में बैठकर सीखने तथा रहने के लिए मजबूर होता है। यदि प्रकृति को समझना है तो प्रकृति के बीच में आना और रहना होगा। पर्यावरण शिक्षा उसे एक ऐसा ही अवसर देती है, जिसमें वह प्रकृति की एक-एक बात को पूरी तरह समझ सके और उसके अनुसार अपने जीवन को ढाल सके तथा अपने जीवन का निर्माण कर सके।

संघर्ष के स्थान पर सह-अस्तित्व

पर्यावरण शिक्षा हमारे सामने 'अनुकूलन का सिद्धांत' रखती है, अर्थात् प्रकृति से मेल-जोल रखने का सिद्धांत। इस प्रकार की स्थिति में संघर्ष और तनाव का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। जब हमें जीव-जंतु एवं पेड़-पौधे ही नहीं सताते तो हमें क्या हक है कि हम उनकी शांति को छीनें या अपने स्वार्थ लिप्सा की पूर्ति के लिए उनका विनाश अथवा संहार करें। होना तो यह चाहिए कि हम उनका पोषण करें और वे हमारे काम आएँ।

प्रकृति का संतुलन इतने गज़ब का है कि जीव-जंतु, पेड़-पौधे तथा इनसान कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं तथा वे एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इस सत्य को समझना पर्यावरण शिक्षा का लक्ष्य है।

पर्यावरण शिक्षा बच्चे की एक बुनियादी आवश्यकता है। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी का मानना है कि बच्चा अपने पर्यावरण के साथ अंतर-क्रिया द्वारा ही सीखता है। उसके संपर्क में आने से ही उसमें समझ आती है।

बालक को कक्षा में बिठाकर डाकिया, मछुआरा या धोबी के बारे में बताया जाए तो वह इतनी अच्छी तरह से नहीं सीख सकेगा, जितनी अच्छी तरह से स्वयं देखकर, उनसे बातचीत करके सीख सकेगा। यही बात प्रकृति के संबंध में भी लागू होती है।

बालक को यदि इस बात की समझ हो जाए कि प्राकृतिक संसाधन बहुत सीमित हैं तो ऐसी स्थिति में वह पहले से ही सजग और सावधान हो जाएगा तथा प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों का सोच-समझकर उचित उपयोग करने लगेगा। इसलिए पर्यावरण शिक्षा में आशातीत पर्यावरण सुधार की संभावनाएँ हैं। यदि इसका सही उपयोग किया जाए तो यह अपने आप में पर्यावरण सुधार की दिशा में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

उद्देश्य एवं उपलब्धियाँ

पर्यावरण संबंधी अध्ययन से निम्न वर्णित उद्देश्यों की पूर्ति हो सकती है —

1. पारिस्थितिकी के साथ मनुष्य के संबंधों में सुधार के लिए बल मिल सकता है;
2. एक ऐसे विश्व-जनमत का विकास होगा, जो पर्यावरण के बारे में संवेदनशील होगा तथा पर्यावरण के ह्रास के लिए चिंता करने वाला होगा; एवं
3. मनुष्य में इस प्रकार की कुशलताओं, दृष्टिकोणों तथा प्रतिबद्धताओं का विकास होगा, जिनके कारण वह व्यक्तिगत रूप से अथवा समूह के साथ मिलकर पर्यावरण संबंधी समस्याओं को सुलझा सकेगा और ऐसी समस्याओं की पुनरावृत्ति को भी रोक सकेगा।

इससे प्रकृति के बारे में उसकी मूलभूत सूझ का विकास होता है और वह प्रकृति के बारे में अपनी उत्तरदायी भूमिका से परिचित होने लगता है। सामाजिक मूल्यों तथा संवेदनशील भावनाओं के विकास के कारण वह पर्यावरण के प्रति अपना लगाव रखना सीखता है। वह उसके संरक्षण और संवर्धन के लिए अधिक क्रियाशील बनता है। वह पर्यावरण की समस्याओं को सुलझाने का कौशल प्राप्त करता है तथा पर्यावरण संबंधी शैक्षिक कार्यक्रमों का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकीय बिंदुओं के आधार पर मूल्यांकन करने में समर्थ होता है।

पर्यावरण शिक्षा के विषय

पर्यावरण शिक्षा प्राप्त करने का सरल-सा यह अर्थ है कि बालक अग्रलिखित वर्णित विषयों को पढ़ने, सोचने, समझने तथा अपने विचार व्यक्त करने के अवसर प्राप्त कर सके —

1. मानव और उसका पर्यावरण;
2. जनसंख्या-वृद्धि और उसके नियंत्रण के उपाय;
3. शहरीकरण और उसकी समस्याएँ
4. पारिस्थितिकीय-तंत्र;
5. पर्यावरण और आर्थिक स्थिति;
6. सामाजिक संसाधन;
7. प्राकृतिक संसाधन — वनस्पति, जल, ऊर्जा, ध्वनि, मृदा आदि;
8. प्रदूषण — वायु, जल, ऊर्जा, ध्वनि आदि;
9. नागरिक के रूप में व्यक्ति की भूमिका एवं कर्त्तव्य;
10. पर्यावरण तथा अन्य विभिन्न विषय; एवं
11. पर्यावरण की समस्याएँ और उनका निदान-समाधान।

कुछ सामाजिक समस्याएँ, जैसे—जनसंख्या में वृद्धि, निरक्षरता, गरीबी, बेकारी एवं वातावरण का प्रदूषण आदि-आदि। ये सभी समस्याएँ कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में पर्यावरण के मूल प्रश्न से जुड़ी हुई हैं। मनुष्य की नासमझी तथा अकर्मण्यता ने इन समस्याओं को और भी भयंकर बना दिया है। कारण कुछ भी रहे हों, इनका असर मानव और पर्यावरण, दोनों पर ही पड़ रहा है। पर्यावरण शिक्षा इस प्रकार के सामाजिक प्रश्नों पर भी हमें सचेत करती है।

पर्यावरण शिक्षा का पाठ्यक्रम

इस संबंध में मूल प्रश्न यह है कि पर्यावरण शिक्षा कैसे दी जाए? इसके लिए पाठ्यक्रम कैसा हो? पर्यावरण शिक्षा का पाठ्यक्रम, प्रकृति और समाज के संगम

को दृष्टिगत रखते हुए होना चाहिए तथा पाठ्यक्रम के अनुसार बालकों को प्रकृति की गोद में ही पर्यावरण शिक्षा दी जानी चाहिए। प्राथमिक, उच्च माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों एवं शिक्षण में निरंतरता का बना रहना भी आवश्यक है। बालक की जिज्ञासा धरातल जितनी अधिक बढ़ती जाती है, पर्यावरण शिक्षा की सामग्री का फैलाव भी उतना ही अधिक होता जाता है।

पर्यावरण की विश्वव्यापी चेतना

उच्च माध्यमिक स्तर तथा विश्वविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा के विषय तथा पाठ्य-वस्तु विस्तृत हो जाते हैं। प्रदूषण के संबंध में इस स्तर पर रेडियोधर्मी प्रदूषण, गैस तथा तेल-प्रदूषण, नाभिकीय अस्त्रों के कुप्रभाव और प्रदूषण जैसे विषयों की जानकारी देना उचित हो सकता है। इस स्तर पर पारिस्थितिकीय संबंधी ज्ञान को विस्तार दिया जा सकता है। इस स्तर पर प्रदूषण के भौतिक, रासायनिक तथा जैविक कारकों को विस्तार से समझाया जा सकता है। इस आयु के युवाओं को विश्व भर में जो-जो पर्यावरण संबंधी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुए हैं या यूनेस्को तथा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इस संबंध में जिन आयोगों अथवा समितियों का गठन किया है, उनकी जानकारी दी जा सकती है। इससे उनमें पर्यावरण संबंधी विश्वव्यापी चेतना का विकास होगा।

मनोदशा में परिवर्तन

पर्यावरण चेतना के लिए मूल बात मानव की अभिवृत्ति को बदलने तथा उसकी मनोदशा को पर्यावरण चेतना के अनुकूल बनाने की है। इस दिशा में कई प्रकार से कार्य किए जा सकते हैं। पर्यावरण शिक्षा को औपचारिकता से बाहर निकालकर यदि प्रकृति से जोड़ दिया जाए तथा समाज से जुड़ाव रहे तो प्रकृति का और समाज का संस्पर्श मिल सकता है, लेकिन यह तभी हो सकता है, जब शिक्षा केवल औपचारिक न रहे। पर्यावरण की शिक्षा का अनौपचारिक स्वरूप भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना उसका औपचारिक स्वरूप महत्वपूर्ण है।

अनौपचारिक शिक्षा एक ऐसी सटीक शिक्षा की स्थिति है, जिसमें प्रदर्शन, दिखावा अथवा आडंबर का कोई स्थान नहीं है। एक बालक कक्षा की वास्तविक स्थिति से बाहर आएगा तो उसे कई अनुभव होंगे। वह पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ेगा, रेडियो, खेल-कूद, भ्रमण, देशाटन आदि में भी भाग लेगा। वह प्रकृति का अवलोकन तथा चित्रांकन भी करेगा। अनौपचारिक शिक्षा का क्षेत्र इन सभी संभावनाओं को लिए हुए है और इस अनौपचारिक शिक्षा से बालक की मनोदशा में वातावरण के प्रति परिवर्तन आ सकता है। इन्हीं मनोभावों के आलोक में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—2005 में अनौपचारिक शिक्षा को अधिगमकर्ता के परिवेशीय ज्ञान के रूप में सुझाया गया है।

प्रकृति से साक्षात्कार

प्रकृति एक खुली किताब है। प्रकृति की गोद में जो सहज सुख और आनंद मिल सकता है, वह अन्यत्र कहीं मिल ही नहीं सकता। यदि हम प्रकृति से अध्ययन करना चाहें तो अनेक ऐसे स्थल हैं, जहाँ पर बच्चों को ले जा सकते हैं, जैसे — कृषि अनुसंधान केंद्र, वन विभाग की कार्यशालाएँ एवं पौधशालाएँ, स्थानीय

उद्यान और पार्क, सरोवर, नहरें, अभ्यारण्य, प्राकृतिक संग्रहालय, आदि-आदि। ऐसे प्रत्येक स्थान एक नया अनुभव और एक नया संस्कार पैदा कर सकेंगे।

बालक प्राकृतिक वातावरण में रहेंगे, तो उन्हें आनंद की अनुभूति होगी, ज्यों-ज्यों उनकी जिज्ञासा बढ़ती जाए, उनसे प्रश्न पूछे जाएँ एवं उनके जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों के उत्तर दिए जाएँ। कोई समस्या हो तो उसका समाधान किया जाए, इस प्रकार की प्रक्रिया अपनाने से उनके ज्ञान और अनुभव का स्वाभाविक विकास होगा। छोटे-छोटे प्रश्न जिज्ञासा को बढ़ाते हैं तथा बच्चों को सोचने के लिए मजबूर करते हैं। हमें इन सब बातों का पूरा-पूरा लाभ लेना चाहिए।

भविष्यगामी शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा का संबंध मानव जीवन से है। विकास के इस युग में मानव प्रकृति का संरक्षण कैसे करे? तथा कैसे अपनी भावी पीढ़ियों को विनाश से बचाए? यह चिंता उसे हर समय रहती है। पर्यावरण की शिक्षा प्राप्त व्यक्ति या मानव लगातार ऐसे प्रयास करता है, जिससे उसके और पर्यावरण के बीच का संतुलन बना रहे। उसमें किसी भी प्रकार की बाधा या व्यवधान न आने पाए।

संस्कारों से पर्यावरण शिक्षा

संस्कारों का अपना ही एक अलग रचना संसार होता है। इस रचना संसार को बँधे-बँधाए दायरों में सीमित नहीं किया जा सकता। यदि शुरू से ही बच्चों को इस दिशा में प्रवृत्त कर दिया जाए तो वे सही संस्कारों को ग्रहण कर सकेंगे। बच्चे यदि बीजों का संग्रह करते हों या पत्तियों के नमूने इकट्ठे कर रहे हों अथवा भिन्न-भिन्न पक्षियों के पंखों का संकलन कर रहे हों, तो भी वे नये संस्कारों के दायरे में आते हैं। उनमें एक जिज्ञासा है। वे बहुत कुछ नया जानना चाहते हैं। जानने के साथ-साथ उन पक्षियों, उन पादपों, उन फ़सलों से वे एक प्रकार की आत्मीयता भी महसूस करते हैं। संस्कारों का यह क्रम ही उनको प्रकृति से जोड़ता है। शिक्षक बच्चों की इस रुचि को सही दिशा दें तो प्रारंभ से ही उनमें प्रकृति से साहचर्य के संस्कार पैदा हो जाएँगे और ऐसे बालक आगे जाकर न नदियों को प्रदूषित करेंगे, न वनों की निर्मम कटाई करेंगे और न जनसंख्या की वृद्धि में सहायक होंगे। पर्यावरण शिक्षा का दर्शन बालक को प्रारंभ से ही सही दिशा में सोचने, सचेत होने और संस्कारी बनने में मार्गदर्शन करेगा।

संदर्भ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—2005*. नयी दिल्ली.

———. 2006. *आवास और सीखना* (राष्ट्रीय फ़ोक्स समूह का आधार पत्र). नयी दिल्ली.

कालभोर, गोपीनाथ. 2005. *प्रदूषण नियंत्रण और पर्यावरणीय सजगता*. ज्योति प्रकाशन, जयपुर.

कुमार, कृष्ण. 2001. *राज, समाज और शिक्षा*. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.

डीवी, जॉन. 2004. *शिक्षा और लोकतंत्र*. ग्रंथ शिल्पी. नयी दिल्ली.

पाण्डेय, पृथ्वीनाथ. 2005. *वन्य-संपदा और पर्यावरण*. सोनम प्रकाशन, भोपाल.

मणिवासकम, एन. 1998. *हवा और पानी में ज़हर*. नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दिल्ली.

——. 2002. *एन्वायरन्मेंटल पॉल्यूशन*. नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दिल्ली.

शर्मा, दामोदार और हरिश्चन्द्र व्यास. 2007. *आधुनिक जीवन और पर्यावरण*. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.

सी.बी.एस.ई. 2010. *फ़ॉरमेटिव असेसमेंट मैनुअल फ़ॉर टीचर*. कक्षा 9-10. सामाजिक विज्ञान. दिल्ली.